

योएल की पुस्तक और लाओदीकिया की सप्तम-दिवसीय एडवेंटिस्ट कलीसिया - संख्या तीन

लाल शराब के लिए अंगूर का एक बाग़

Jeff Pippenger

2025-12-03

हमने पिछले लेख का समापन इस प्रश्न के साथ किया था: “इन अवधारणाओं को स्थापित करने के बाद यह प्रश्न उठाया जा सकता है कि 9/11 के समय योएल की पुस्तक कैसे वह संदेश बन गई जिसे पेंटेकोस्ट के दिन पेत्रस ने पहचाना था?”

पतरस यह पहचान रहा था कि पेंटेकोस्ट के दिन योएल की भविष्यवाणी पूरी हो रही थी, जो पेंटेकोस्ट की अवधि के अंत को चिह्नित करने वाला समय-बिंदु है। पेंटेकोस्ट की अवधि में आरंभ में पवित्र आत्मा का प्रकट होना हुआ, और अंत में पवित्र आत्मा का उससे भी बड़ा प्रगटीकरण हुआ। विश्वास से यह समझते हुए कि बाइबल और भविष्यवाणी की आत्मा दोनों ही योएल को अंतिम वर्षा के समय पर लागू करती हैं, हम जान सकते हैं कि 9/11 पर योएल की पुस्तक वर्तमान सत्य बन गई; और यह कि उस पुस्तक का प्रत्येक तत्व 9/11 से आरंभ होकर, सात अंतिम विपत्तियों सहित, उस भविष्यसूचक इतिहास के बारे में सीधे बोलेगा, जिन्हें योएल "प्रभु का दिन" के रूप में पहचानता है।

जैसा कि 1888 द्वारा प्रतीकित है, 11 सितंबर को लाओदीकिया के संदेश की प्रस्तुति वर्तमान परीक्षात्मक सत्य बन गई। यशायाह उसी संदेश को अध्याय अट्ठावन में, नरसिंगे के समान आवाज़ के द्वारा परमेश्वर की प्रजा को उनके अपराध दिखाते हुए, प्रतीकित करता है। जिस "दिन" यशायाह अपनी आवाज़ नरसिंगे के समान उठाना शुरू करता है, वही दिन है जब वह दाख की बारी का गीत गाता है।

उस दिन उसके विषय में गाओ, “लाल दाखरस की एक दाखबारी।” मैं, प्रभु, उसकी रक्षा करता हूँ; मैं हर पल उसे सींचूंगा; कहीं उसे कोई हानि न पहुँचे, इसलिए मैं दिन-रात उसकी रखवाली करूँगा। मुझ में प्रकोप नहीं है; कौन है जो मेरे विरुद्ध युद्ध में झाड़-झंखाड़ और काँटे खड़े करे? मैं उनके बीच से होकर निकल जाऊँगा, मैं उन्हें एक साथ जला दूँगा। या वह मेरे बल को थाम ले, ताकि वह मुझसे मेल कर ले; हाँ, वह मुझसे मेल करेगा। याकूब की संतान जड़ पकड़ेगी; इस्राएल फूलेगा और कोंपलाएगा, और समस्त पृथ्वी के मुख को फल से भर देगा। यशायाह 27:2-6.

आधुनिक आध्यात्मिक इस्राएल “फूलेगा और कोंपल निकालेगा, और फल से संसार का मुख भर देगा” अन्तिम वर्षा की अवधि के दौरान; क्योंकि प्रारम्भिक वर्षा किसी पौधे में कोंपल और फूल लाती है, और अन्तिम वर्षा फल उत्पन्न करती है। 9/11 पर जब न्यूयॉर्क की इमारतें ढह गईं, तो प्रकाशितवाक्य अठारह का शक्तिशाली स्वर्गदूत उतरा और अन्तिम वर्षा की फुहारें पड़ने लगीं। उस समय परमेश्वर के पहरेदारों को लाओदीकिया की कलीसिया के लिए तुरही फूँकनी थी। यशायाह का वह सन्देश, जो परमेश्वर की प्रजा के पापों को पहचानता है, लाल दाखमधु की दाखबारी का गीत भी है। योएल का पहला अध्याय वही सन्देश है।

प्रभु का वचन जो पेटूएल के पुत्र योएल के पास आया।

हे वृद्धों, यह सुनो, और हे देश के सब निवासी, ध्यान दो। क्या यह तुम्हारे दिनों में हुआ है, या तुम्हारे पितरों के दिनों में भी? इसे अपने बच्चों को बताओ, और तुम्हारे बच्चे अपने बच्चों को बताएं, और उनके बच्चे एक और पीढ़ी को बताएं।

जो कुछ अंकुर-भक्षी कीड़े ने छोड़ा, उसे टिड्डी ने खा लिया; और जो कुछ टिड्डी ने छोड़ा, उसे पत्ती-भक्षी कीड़े ने खा लिया; और जो कुछ पत्ती-भक्षी कीड़े ने छोड़ा, उसे इल्ली ने खा लिया।

जागो, हे मद्यपानियों, और रोओ; और विलाप करो, हे सब दाखमदिरा पीने वालो, नए दाखरस के कारण; क्योंकि वह तुम्हारे मुख से काट लिया गया है।

क्योंकि एक जाति मेरी भूमि पर चढ़ आई है, बलवान और असंख्य, जिसके दाँत सिंह के दाँत हैं, और जिसकी दाढ़ें बड़े सिंह जैसी हैं। उसने मेरी दाखलता उजाड़ दी है, और मेरे अंजीर के पेड़ की छाल उधेड़ दी है; उसे बिल्कुल नंगा कर के फेंक दिया है; उसकी डालियाँ सफेद हो गई हैं। अपनी युवावस्था के पति के लिए टाट कमर में बाँधे कुँवारी की तरह विलाप करो। मांस-भेंट और पान-भेंट प्रभु के घर से कट गई हैं; याजक, प्रभु के सेवक, शोक करते हैं। खेत उजड़ गया है, भूमि विलाप करती है; क्योंकि अन्न नष्ट हो गया है; नयी दाखरस सूख गई है, तेल मन्द पड़ गया है।

हे किसानों, लज्जित हो; हे दाखबागियों, विलाप करो—गेहूँ और जौ के लिए; क्योंकि खेत की फसल नष्ट हो गई है। दाखलता सूख गया है, और अंजीर का पेड़ कुम्हला गया है; अनार का पेड़, खजूर भी, और सेब का पेड़—यहाँ तक कि खेत के सब पेड़—सब मुरझा गए हैं; क्योंकि मनुष्यों के बीच से हर्ष सूख गया है।

हे याजको, कमर कसो और विलाप करो; हे वेदी के सेवको, हाय-हाय करो; आओ, हे मेरे परमेश्वर के सेवको, टाट ओढ़कर सारी रात पड़े रहो; क्योंकि अन्न-भेंट और पान-भेंट तुम्हारे परमेश्वर के भवन से रोक दी गई हैं। उपवास ठहराओ, पवित्र सभा बुलाओ, पुरनियों और देश के सब निवासियों को प्रभु तुम्हारे परमेश्वर के भवन में इकट्ठा करो, और प्रभु को पुकारो: हाय उस दिन के लिए! क्योंकि प्रभु का दिन निकट है, और वह सर्वशक्तिमान की ओर से विनाश के समान आएगा। क्या हमारे देखते-देखते अन्न छिन नहीं गया? हाँ, हमारे परमेश्वर के घर से हर्ष और आनन्द भी। ढेलों के नीचे बीज सड़ गया है, कोठार उजड़ गए हैं, खलिहान ढह गए हैं; क्योंकि अन्न सूख गया है। कैसे पशु कराहते हैं! गाय-बैलों के झुंड भ्रमित हैं, क्योंकि उनके पास चरागाह नहीं है; हाँ, भेड़ों के झुंड उजाड़ हो गए हैं।

हे प्रभु, मैं तेरी ही ओर पुकारूँगा: क्योंकि आग ने वन-प्रदेश के चरागाहों को निगल लिया है, और ज्वालाने क्षेत्र के सब वृक्षों को जला डाला है। क्षेत्र के पशु भी तेरी ओर पुकारते हैं: क्योंकि पानी की नदियाँ सूख गई हैं, और आग ने वन-प्रदेश के चरागाहों को निगल लिया है। योएल 1:1-20.

योएल का पहला अध्याय परमेश्वर की दाख की बारी के विनाश को संबोधित करता है। यशायाह "उस दिन" को उस दिन के रूप में ठहराता है जब अंतिम वर्षा आरंभ होती है, क्योंकि उसी दिन पौधे फूलने और कली लगाने लगते हैं। यह तथ्य कि यशायाह हमें बताता है कि परमेश्वर की प्रजा "जड़ पकड़ेगी," "फूलेगी और कली लगाएगी" और "फल" से पृथ्वी को भर देगी, तीन चरणों के एक क्रमिक इतिहास को दर्शाता है। एक पौधा भूमि में "जड़ पकड़ता" है। अतः "जड़ पकड़ना" का अर्थ भूमि पर स्थिर हो जाना है, जो कि भूतल या नींव है। जो "याकूब से निकलते" हैं वे "जड़ पकड़ते" हैं और तब उन्हें "इसाएल" कहा जाता है। जो लोग लाओदीकिया के अनुभव से बाहर आते हैं उन्हें तब फिलादेल्फियाई कहा जाता है, यद्यपि उस अनुभव को बनाए रखने के लिए एक परीक्षण-प्रक्रिया में विजय पाना आवश्यक है जो रविवार के कानून पर आकर समाप्त होती है।

याकूब (वंचक) और इसाएल (विजेता) का भविष्यवाणीगत संबंध यह दर्शाता है कि 9/11 पर जो लोग नींवों की ओर लौटकर "जड़ पकड़ते" हैं, वे वहीं और उसी समय एक वाचा-संबंध में प्रवेश करते हैं। भविष्यवाणी की दृष्टि से नाम का परिवर्तन वाचा का एक प्रतीक है, जैसा कि अब्राहम से अब्राहम, सारै से सारा, याकूब से इसाएल और अन्य में दिखाई देता है। उस पद में 9/11 पर जो लोग पुरानी बुनियादी सच्चाइयों की ओर लौटे, वे वाचा-संबंध में प्रवेश कर गए, क्योंकि वर्षा के कारण फूल और कोंपलें आने लगीं। रविवार के कानून के समय, जब वर्षा तब बिना माप के उँडेली जाएगी, तब समूचा संसार "फल" से भर जाएगा।

यशायाह को यशायाह से, और स्वाभाविक ही अन्य सभी नबियों से भी, सहमत होना चाहिए; पर यशायाह को अपनी वाणी तुरही की तरह ऊँची उठाकर लाओदीकियाई सातवें दिन के एडवेंटिस्टों को दाख की बारी के गीत के संदर्भ में उनके पाप दिखाने हैं। वह गीत यीशु ने दाख की बारी के दृष्टान्त में गाया था। क्रूस से पहले अंतिम बार जब उसने

यरूशलेम पर दृष्टि डाली, तो उसी दाख की बारी ने उसे रुला दिया; यह जानते हुए कि प्राचीन इस्राएल अपनी परख की अवधि के अंत तक पहुँच चुका था और परमेश्वर के वाचा-जन के रूप में उसे छोड़ दिया जा रहा था। इसी समय मसीह उन लोगों के साथ वाचा में प्रविष्ट हो रहा था जो परमेश्वर की दाख की बारी से उचित फल लाएँगे। चाहे शुरुआत में यहोशू की दाख की बारी की कहानी हो या अंत में यीशु की, जो नए वाचा-जन बने, वे एक लाख चवालीस हज़ार का प्रतीक थे।

मसीह ने यशायाह की दाख की बारी की भविष्यवाणी का उल्लेख किया, जैसा कि सिस्टर व्हाइट भी करती हैं।

दाख की बारी का दृष्टान्त केवल यहूदी राष्ट्र पर ही लागू नहीं होता। उसमें हमारे लिए भी एक शिक्षा है। इस पीढ़ी की कलीसिया को परमेश्वर ने बड़े विशेषाधिकार और आशीषें प्रदान की हैं, और वह उसके अनुरूप समुचित प्रतिफल की अपेक्षा करता है। Christ Object Lessons, 296.

भविष्यवाणी की आत्मा के अंतिम कथन तक पहुँचाने वाले अंश को पढ़ना शिक्षाप्रद है।

अध्याय 23—प्रभु की दाख की बारी

यहूदी राष्ट्र

दो पुत्रों के दृष्टान्त के बाद, दाख की बारी का दृष्टान्त सुनाया गया। पहले में, मसीह ने यहूदी शिक्षकों के सामने आज्ञाकारिता का महत्त्व रखा। दूसरे में, उन्होंने इस्राएल को दी गई प्रचुर आशीषों की ओर संकेत किया, और इन्हीं के द्वारा यह दिखाया कि परमेश्वर उनके आज्ञापालन के हकदार हैं। उन्होंने उनके सामने परमेश्वर के उद्देश्य की महिमा रखी, जिसे वे आज्ञाकारिता के द्वारा पूरा कर सकते थे। भविष्य का परदा उठाकर, उन्होंने दिखाया कि उसके उद्देश्य को पूरा न करने के कारण समस्त राष्ट्र उसकी आशीष से वंचित हो रहा था और अपने ऊपर विनाश ले आ रहा था।

"'एक गृहस्वामी था,' मसीह ने कहा, 'जिसने एक दाख की बारी लगाई, उसके चारों ओर बाड़ लगाई, उसमें रसकुंड खोदा, एक मीनार बनाई, उसे बटाईदारों को दे दिया, और दूर देश चला गया।'"

इस दाख की बारी का वर्णन भविष्यद्वक्ता यशायाह ने किया है: 'अब मैं अपने प्रिय के लिये, उसकी दाख की बारी के विषय में, अपने प्रिय का एक गीत गाऊँगा। मेरे प्रिय की बहुत उपजाऊ पहाड़ी पर एक दाख की बारी थी; और उसने उसके चारों ओर बाड़ लगाई, और उसके पत्थर चुन-चुन कर निकाल दिए, और उसमें उत्तम दाखलता लगाई, और उसके बीच में एक मीनार बनाई, और उसमें रस-कुंड भी बनाया; और उसने आशा की कि वह अंगूर लाए।' यशायाह 5:1, 2.

किसान उजाड़ में से भूमि का एक टुकड़ा चुनता है; वह उसमें बाड़ लगाता है, उसे साफ करता है, जोतता है, और उसमें उत्तम दाखलताएँ लगाता है, एक भरपूर फसल की आशा करते हुए। यह खेत, जो अनखेती उजाड़ से श्रेष्ठ है, उसकी देखरेख और परिश्रम के परिणाम दिखाकर उसकी प्रतिष्ठा बढ़ाएगा—ऐसी उसकी अपेक्षा होती है। इसी प्रकार परमेश्वर ने संसार में से एक लोगों को चुना था, ताकि मसीह द्वारा उन्हें शिक्षित और प्रशिक्षित किया जाए। नबी कहता है, "सेनाओं के यहोवा की दाख की बारी इस्राएल का घराना है, और यहूदा के पुरुष उसकी मनभाती रोपाई हैं।" यशायाह 5:7। इस लोगों पर परमेश्वर ने बड़े विशेषाधिकार दिए, अपनी प्रचुर भलाई से उन्हें भरपूर आशीष दी। वह अपेक्षा करता था कि वे फल लाकर उसकी महिमा करें। उन्हें उसके राज्य के सिद्धांत प्रकट करने थे। गिरे हुए, दुष्ट संसार के बीच उन्हें परमेश्वर के चरित्र का प्रतिनिधित्व करना था।

प्रभु की दाख की बारी के रूप में उन्हें अन्यजाति राष्ट्रों से सर्वथा भिन्न फल उत्पन्न करना था। इन मूर्तिपूजक जातियों ने दुष्टता करने के लिए अपने आप को समर्पित कर दिया था। हिंसा और अपराध, लोभ, उत्पीड़न, और अत्यन्त भ्रष्ट आचरण बिना किसी रोक-टोक के किए जाते थे। अधर्म, पतन, और दुर्दशा उस भ्रष्ट वृक्ष के फल थे। इसके स्पष्ट विपरीत, परमेश्वर द्वारा रोपी गई दाखलता पर लगने वाला फल होना था।

यहूदी राष्ट्र का यह विशेषाधिकार था कि वह परमेश्वर के उस चरित्र का प्रतिनिधित्व करे जो मूसा पर प्रकट किया गया था। मूसा की प्रार्थना—'मुझे अपनी महिमा दिखा'—के उत्तर में प्रभु ने प्रतिज्ञा की, 'मैं अपनी सारी भलाई तेरे सामने से होकर जाने दूँगा।' निर्गमन 33:18, 19. 'और यहोवा उसके सामने से होकर गया और यह घोषणा की: यहोवा, यहोवा परमेश्वर, दयालु और अनुग्रहकारी, धीरज्वन्त, और भलाई तथा सत्य से परिपूर्ण, हजारों के लिए दया बनाए रखने वाला, अधर्म और अपराध और पाप को क्षमा करने वाला।' निर्गमन 34:6, 7। यही वह फल था जिसकी परमेश्वर अपने लोगों से इच्छा रखता था। अपने चरित्र की शुद्धता में, अपने जीवन की पवित्रता में, अपनी दया, प्रेम-कृपा और करुणा में, उन्हें यह दिखाना था कि 'यहोवा की व्यवस्था सिद्ध है, वह प्राण को परिवर्तित करती है।' भजन संहिता 19:7.

यहूदी राष्ट्र के माध्यम से परमेश्वर का उद्देश्य समस्त जातियों को विपुल आशीर्षे प्रदान करना था। इस्राएल के माध्यम से उसके प्रकाश का समूचे संसार में प्रसार करने के लिए मार्ग प्रशस्त किया जाना था। संसार की जातियों ने भ्रष्ट प्रथाओं का अनुसरण करते-करते परमेश्वर का ज्ञान खो दिया था। फिर भी, अपनी करुणा में परमेश्वर ने उन्हें अस्तित्व से मिटा नहीं दिया। उसने ठहराया कि अपनी कलीसिया के माध्यम से उन्हें अपने से परिचित होने का अवसर दिया जाए। उसने ठहराया कि अपने लोगों के द्वारा प्रकट किए गए सिद्धांत मनुष्य में परमेश्वर की नैतिक प्रतिमा की पुनर्स्थापना का साधन बनें।

इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए परमेश्वर ने अब्राहम को उसके मूर्तिपूजक कुटुम्ब से बाहर बुलाया और उसे कनान देश में बसने की आज्ञा दी। 'मैं तुझसे एक बड़ी जाति बनाऊँगा,' उसने कहा, 'और तुझे आशीर्ष दूँगा, और तेरा नाम महान करूँगा; और तू आशीर्ष बनेगा।' उत्पत्ति 12:2.

अब्राहम के वंशज—याकूब और उसकी संतति—को मिस्र ले जाया गया ताकि उस महान और दुष्ट राष्ट्र के बीच वे परमेश्वर के राज्य के सिद्धांतों को प्रकट कर सकें। यूसुफ की सत्यनिष्ठा और समस्त मिस्री प्रजा के प्राणों की रक्षा करने का उसका अद्भुत कार्य मसीह के जीवन का प्रतिरूप था। मूसा और अनेक अन्य परमेश्वर के साक्षी थे।

मिस्र से इस्राएल को निकालते समय, प्रभु ने फिर से अपनी शक्ति और अपनी दया प्रगट की। दासत्व से उन्हें छुड़ाते हुए उसके अद्भुत कार्य और जंगल के मार्ग में उनकी यात्राओं के दौरान उनके साथ उसका व्यवहार केवल उनके ही लाभ के लिए नहीं था। ये आसपास की जातियों के लिए एक शिक्षाप्रद उदाहरण होने वाले थे। प्रभु ने अपने आप को समस्त मानवीय अधिकार और महानता से ऊपर परमेश्वर के रूप में प्रगट किया। अपनी प्रजा के पक्ष में उसने जो चिन्ह और अद्भुत कार्य किए, उन्होंने प्रकृति पर, और प्रकृति की उपासना करने वालों में से सबसे महान पर भी, उसकी शक्ति दिखा दी। परमेश्वर मिस्र की अभिमानी भूमि के बीच से वैसे ही होकर निकला जैसे वह अंतिम दिनों में पृथ्वी के बीच से होकर निकलेगा। आग और आँधी-तूफान, भूकम्प और मृत्यु के साथ, महान 'मैं हूँ' ने अपनी प्रजा का छुड़ाव किया। उसने उन्हें दासत्व की भूमि से बाहर निकाल लिया। उसने उन्हें उस 'बड़े और भयंकर जंगल' से होकर ले चला, 'जहाँ दाहक सर्प, और बिच्छू, और जल का अभाव था।' व्यवस्थाविवरण 8:15। उसने 'चकमक की चट्टान' से उनके लिए जल निकाल दिया, और उन्हें 'स्वर्ग का अन्न' खिलाया। भजनसंहिता 78:24। 'क्योंकि,' मूसा ने कहा, 'प्रभु का भाग उसकी प्रजा है; याकूब उसकी मीरास का भाग है। उसने उसे मरुभूमि देश में, और उजाड़, गर्जन करती मरुभूमि में पाया; उसने उसे मार्ग दिखाया, उसे शिक्षा दी, और अपनी आँख की पुतली के समान उसकी रखवाली की। जैसे उकाब अपना घोंसला उद्वेलित करता है, अपने बच्चों पर मंडराता है, अपने पंख फैलाकर उन्हें उठा लेता है, और अपने पंखों पर उन्हें ढोता है; वैसे ही प्रभु ने अकेले उसे मार्ग दिखाया, और उसके साथ कोई पराया देवता नहीं था।' व्यवस्थाविवरण 32:9-12। इस प्रकार वह उन्हें अपने पास ले आया, ताकि वे परमप्रधान की छाया तले निवास करें।

मसीह मरुभूमि में उनके भटकने के दिनों में इस्राएल की सन्तान के नेता थे। दिन में मेघ के स्तंभ और रात में अग्नि के स्तंभ से आच्छादित होकर, उन्होंने उनका नेतृत्व किया और मार्गदर्शन दिया। उन्होंने उन्हें मरुभूमि के खतरों से सुरक्षित रखा, उन्हें प्रतिज्ञा के देश में पहुँचाया, और उन सब जातियों के सामने जो परमेश्वर को नहीं मानती थीं, इस्राएल को अपनी निज चुनी हुई संपत्ति, प्रभु की दाख की बारी, के रूप में स्थापित किया।

इस प्रजा को परमेश्वर के वचन सौंपे गए थे। वे उसकी व्यवस्था की उन आज्ञाओं से चारों ओर से सुरक्षित किए गए थे, जो सत्य, न्याय और पवित्रता के सनातन सिद्धांत हैं। इन सिद्धांतों का पालन ही उनकी रक्षा था, क्योंकि इससे वे पापपूर्ण आचरणों द्वारा अपने आप को नष्ट करने से बचते। और जैसे दाख की बारी में एक मीनार होती है, वैसे ही परमेश्वर ने देश के मध्य में अपना पवित्र मंदिर स्थापित किया।

मसीह उनके शिक्षक थे। जैसे वह मरुभूमि में उनके साथ रहा था, वैसे ही वह आगे भी उनका शिक्षक और मार्गदर्शक बना रहा। मंडप और मंदिर में उसकी महिमा दया-आसन के ऊपर, पवित्र शेखीना में वास करती थी। उनके हित में वह निरंतर अपने प्रेम और धैर्य की प्रचुरता प्रकट करता रहा।

परमेश्वर चाहता था कि उसकी प्रजा इस्राएल स्तुति और महिमा का विषय बने। उन्हें सभी आध्यात्मिक विशेषाधिकार दिए गए थे। उनके चरित्र के निर्माण के लिए जो कुछ भी लाभदायक था, जो उन्हें उसका प्रतिनिधि बनाता, उससे परमेश्वर ने उन्हें वंचित नहीं रखा।

परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति उनकी आज्ञाकारिता उन्हें संसार की जातियों के सामने समृद्धि के अद्भुत उदाहरण बना देती। जो उन्हें हर प्रकार की कुशल कारीगरी में बुद्धि और कौशल दे सकता था, वही उनका शिक्षक बना रहता और अपने नियमों के प्रति आज्ञाकारिता के द्वारा उन्हें श्रेष्ठ बनाकर ऊंचा उठाता। यदि वे आज्ञाकारी रहते, तो वे उन रोगों से सुरक्षित रखे जाते जिनसे अन्य जातियाँ पीड़ित थीं, और उन्हें बौद्धिक स्फूर्ति का आशीर्वाद मिलता। उनकी सारी समृद्धि में परमेश्वर की महिमा, उसकी प्रभुता और शक्ति प्रकट होनी थी। वे याजकों और राजकुमारों का एक राज्य होने वाले थे। पृथ्वी पर सबसे महान राष्ट्र बनने के लिए परमेश्वर ने उन्हें हर प्रकार की सुविधा प्रदान की।

"सबसे स्पष्ट रीति से मसीह ने मूसा के माध्यम से उनके सामने परमेश्वर की योजना रखी थी, और उनकी समृद्धि की शर्तें स्पष्ट कर दी थीं। 'तुम अपने परमेश्वर प्रभु के लिये एक पवित्र लोग हो,' उसने कहा; 'तुम्हारे परमेश्वर प्रभु ने तुम्हें अपने लिये एक विशेष लोग होने के लिये, पृथ्वी के मुख पर जितने लोग हैं, उन सब से ऊपर, चुन लिया है.... सो जान लो कि तुम्हारा परमेश्वर प्रभु ही परमेश्वर है, वह विश्वासयोग्य परमेश्वर है, जो उससे प्रेम रखने वालों और उसकी आज्ञाएँ मानने वालों के साथ हज़ार पीढ़ियों तक वाचा और करुणा निभाता है.... इसलिए आज जो आज्ञाएँ, विधियाँ और नियम मैं तुम्हें आदेश देता हूँ, उन्हें मानो और करो। अतः यह होगा कि यदि तुम इन नियमों को सुनो, और उन्हें मानो और करो, तो तुम्हारा परमेश्वर प्रभु तुम्हारे साथ उस वाचा और दया को स्थिर रखेगा जिसकी शपथ उसने तुम्हारे पितरों से खाई थी; और वह तुमसे प्रेम करेगा, तुम्हें आशीष देगा और तुम्हें बढ़ाएगा: वह तुम्हारे गर्भ का फल, और तुम्हारी भूमि का फल, तुम्हारा अन्न, तुम्हारा दाखरस और तुम्हारा तेल, तुम्हारी गाय-बैलों की बढ़ोतरी, और तुम्हारी भेड़ों के झुंड को भी आशीष देगा, उस देश में जिसकी शपथ उसने तुम्हारे पितरों से तुम्हें देने के लिये खाई थी। तुम सब लोगों से बढ़कर आशीषित होगे.... और प्रभु तुमसे सब बीमारियाँ दूर कर देगा, और मिस्र की वे बुरी बीमारियाँ, जिन्हें तुम जानते हो, तुम पर न डालेगा।' व्यवस्थाविवरण 7:6, 9, 11-15."

यदि वे उसकी आज्ञाओं का पालन करें, तो परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि वह उन्हें सबसे उत्तम गेहूँ देगा और चट्टान से उनके लिए मधु निकालेगा। दीर्घ आयु से वह उन्हें तृप्त करेगा और उन्हें अपना उद्धार दिखाएगा।

परमेश्वर की अवज्ञा के कारण आदम और हव्वा एदेन खो बैठे, और पाप के कारण समस्त पृथ्वी शापित हो गई। परन्तु यदि परमेश्वर के लोग उसके निर्देशों का पालन करते, तो उनकी भूमि की उर्वरता और सुंदरता पुनः स्थापित हो जाती। भूमि की खेती-बाड़ी के संबंध में परमेश्वर ने स्वयं उन्हें निर्देश दिए थे, और उसकी पुनर्स्थापना में उन्हें उसके साथ सहकार्य करना था। इस प्रकार, परमेश्वर के अधीन पूरी भूमि आध्यात्मिक सत्य का एक जीवंत पाठ बन जाती। जैसे उसकी प्राकृतिक व्यवस्थाओं की आज्ञाकारिता में पृथ्वी अपनी संपदाएँ उत्पन्न करती, वैसे ही उसकी नैतिक व्यवस्था की आज्ञाकारिता में लोगों के हृदय उसके स्वभाव के गुणों को प्रतिबिंबित करना था। यहाँ तक कि अन्यजाति लोग भी जीवित परमेश्वर की सेवा और उपासना करने वालों की श्रेष्ठता को पहचान लेते।

"देखो," मूसा ने कहा, "मैंने तुम्हें वैसे ही विधि-विधान और न्याय सिखाए हैं, जैसी मुझे मेरे परमेश्वर प्रभु ने आज्ञा दी थी, ताकि जिस देश में तुम उसे अधिकार में लेने जा रहे हो, वहाँ तुम वैसे ही करो। इसलिए उन्हें मानो और उनका पालन करो; क्योंकि यह अन्य जातियों के सामने तुम्हारी बुद्धि और तुम्हारी समझ है—वे इन सब विधि-विधानों को सुनकर कहेंगी, 'निश्चय ही यह बड़ी जाति बुद्धिमान और समझदार लोग हैं।' क्योंकि ऐसी बड़ी कौन-सी जाति है, जिसका परमेश्वर उससे इतना निकट हो, जैसा कि हमारा प्रभु परमेश्वर हर बात में हमारे निकट होता है, जिनके लिए हम उसे पुकारते हैं? और ऐसी बड़ी कौन-सी जाति है, जिसके पास ऐसे न्यायसंगत विधि-विधान और न्यायादेश हों जैसे यह पूरी व्यवस्था, जिसे मैं आज तुम्हारे सामने रख रहा हूँ?" व्यवस्थाविवरण 4:5-8.

इस्राएल की सन्तान को उस समस्त देश पर अधिकार करना था जिसे परमेश्वर ने उनके लिए ठहराया था। जो जातियाँ सच्चे परमेश्वर की उपासना और सेवा को अस्वीकार करती थीं, उनसे उनका देश छीन लिया जाना था। परन्तु परमेश्वर का उद्देश्य यह था कि इस्राएल के माध्यम से अपने चरित्र का प्रकाश करके वह मनुष्यों को अपनी ओर आकर्षित करे। समस्त जगत को सुसमाचार का निमंत्रण दिया जाना था। बलिदानी व्यवस्था की शिक्षा के द्वारा मसीह को जातियों के सामने ऊँचा उठाया जाना था, और जो कोई उसकी ओर देखे वह जीवित रहे। जो भी, कनानी राहाब और मोआबी रूत के समान, मूर्तिपूजा से फिरकर सच्चे परमेश्वर की उपासना की ओर मुड़ें, उन्हें उसके चुने हुए लोगों के साथ मिल जाना था। और जैसे-जैसे इस्राएल की संख्या बढ़ती, उन्हें अपनी सीमाएँ बढ़ानी थीं, जब तक कि उनका राज्य समस्त जगत को अपने में समाहित न कर ले।

ईश्वर ने चाहा कि सभी जातियाँ उनके दयालु शासन के अधीन आ जाएँ। उन्होंने चाहा कि पृथ्वी आनंद और शांति से भर जाए। उन्होंने मनुष्य को सुख के लिए बनाया, और वे मानव हृदयों को स्वर्गीय शांति से भरने के लिए ललायित हैं। वे चाहते हैं कि धरती के परिवार स्वर्ग के महान परिवार का प्रतीक हों।

परन्तु इस्राएल ने परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा नहीं किया। प्रभु ने कहा, 'मैंने तुझे एक उत्तम दाखलता, सर्वथा सच्चे बीज से रोपा; फिर तू मेरे लिए परदेसी दाखलता का निकृष्ट पौधा कैसे बन गया?' यिर्मयाह 2:21. 'इस्राएल एक खाली दाखलता है, वह अपने ही लिए फल उत्पन्न करता है।' होशे 10:1. 'और अब, हे यरूशलेम के निवासियों, और यहूदा के पुरुषों, मैं तुम से विनती करता हूँ, मेरे और मेरी दाख की बारी के बीच न्याय करो। मेरी दाख की बारी के लिए और क्या किया जा सकता था जो मैंने उसके लिए न किया हो? फिर जब मैंने आशा की कि वह अंगूर उत्पन्न करेगी, उसने जंगली अंगूर क्यों उत्पन्न किए? और अब सुनो; मैं तुम्हें बताऊँगा कि मैं अपनी दाख की बारी के साथ क्या करूँगा: मैं उसकी बाड़ हटाऊँगा, और वह चर ली जाएगी; और उसकी दीवार गिराऊँगा, और वह रौंदी जाएगी; और मैं उसे उजाड़ दूँगा; न वह छाँटी जाएगी और न उसकी खुदाई होगी; परन्तु उसमें ऊँटकटारे और काँटे उगेंगे; मैं बादलों को भी आज्ञा दूँगा कि वे उस पर वर्षा न करें। क्योंकि ... उसने न्याय की आशा की, परन्तु देखो, उत्पीड़न; धर्म की आशा की, परन्तु देखो, चीख-पुकार।' यशायाह 5:3-7.

"प्रभु ने मूसा के द्वारा अपनी प्रजा के सामने बेवफ़ाई का परिणाम रख दिया था। उसकी वाचा का पालन करने से इंकार करके वे अपने आप को परमेश्वर के जीवन से अलग कर लेते, और उसकी आशीष उन पर नहीं आ सकती थी। 'सावधान रहना,' मूसा ने कहा, 'कहीं ऐसा न हो कि आज जिनकी मैं तुझे आज्ञा देता हूँ, उसकी आज्ञाओं, उसके न्यायों और उसके विधि-विधानों को न मानकर तू अपने परमेश्वर प्रभु को भूल जाए: कहीं ऐसा न हो कि जब तू खाए और तृप्त हो जाए, और सुन्दर घर बनाए और उनमें रहने लगे; और जब तेरे पशु-झुंड और तेरी भेड़-बकरियाँ बढ़ें, और तेरी चाँदी और तेरा सोना बढ़े, और जो कुछ तेरे पास है वह सब बढ़े; तब तेरा मन ऊँचा हो जाए और तू अपने परमेश्वर प्रभु को भूल जाए.... और तू अपने मन में कहे, मेरी शक्ति और मेरे हाथ के पराक्रम ने मुझे यह धन-संपत्ति दिलाई है.... और ऐसा होगा कि यदि तू अपने परमेश्वर प्रभु को बिल्कुल ही भूल जाए, और अन्य देवताओं के पीछे चले, उनकी सेवा करे और उनकी उपासना करे, तो मैं आज तुम्हारे विरुद्ध साक्षी देता हूँ कि तुम निश्चय ही नाश हो जाओगे। जैसी वे जातियाँ जिन्हें प्रभु तुम्हारी आँखों के सामने नष्ट करता है, वैसे ही तुम भी नाश हो जाओगे; क्योंकि तुम अपने परमेश्वर प्रभु की वाणी के आज्ञाकारी न रहे।' व्यवस्थाविवरण 8:11-14, 17, 19, 20."

यह चेतावनी यहूदी लोगों ने नहीं मानी। उन्होंने परमेश्वर को भुला दिया, और उसके प्रतिनिधि होने के अपने उच्च विशेषाधिकार की समझ खो दी। उन्हें मिली आशीर्ष संसार के लिए किसी आशीर्ष का कारण नहीं बनीं। अपने सभी लाभ उन्होंने अपने ही महिमामंडन में लगा दिए। उन्होंने परमेश्वर को उस सेवा से वंचित किया जिसकी वह उनसे अपेक्षा करता था, और अपने सहमनुष्यों को धार्मिक मार्गदर्शन तथा पवित्र आदर्श से वंचित कर दिया। प्रलय-पूर्व संसार के निवासियों की तरह, वे अपने दुष्ट हृदय की हर कल्पना के पीछे चल पड़े। इस प्रकार उन्होंने पवित्र बातों को एक तमाशा बना दिया, कहते हुए, 'प्रभु का मन्दिर, प्रभु का मन्दिर, यही हैं' (Jeremiah 7:4), और उसी समय वे परमेश्वर के चरित्र का गलत चित्र प्रस्तुत कर रहे थे, उसके नाम का अनादर कर रहे थे, और उसके पवित्रस्थान को अपवित्र कर रहे थे।

प्रभु की दाखबारी के जिन बागवानों को दायित्व सौंपा गया था, वे अपने दायित्व के प्रति वफादार नहीं रहे। याजक और शिक्षक, लोगों के विश्वसनीय उपदेशक नहीं थे। वे लोगों के सामने परमेश्वर की भलाई और करुणा, तथा उनके प्रेम और सेवा पर उसके अधिकार को नहीं रखते थे। ये बागवान अपनी ही महिमा चाहते थे। वे दाखबारी के फलों को अपने लिए हड़प लेना चाहते थे। उनका प्रयत्न यही था कि लोगों का ध्यान और श्रद्धा-सम्मान अपनी ओर आकर्षित करें।

इसाएल के इन नेताओं का दोष साधारण पापी के दोष जैसा नहीं था। ये लोग परमेश्वर के प्रति अत्यन्त गंभीर दायित्व के अधीन थे। उन्होंने 'प्रभु ऐसा कहता है' सिखाने और कठोर आज्ञापालन को अपने व्यावहारिक जीवन में उतारने की प्रतिज्ञा की थी। यह करने के बजाय वे पवित्र शास्त्रों को तोड़-मरोड़ रहे थे। वे लोगों पर भारी बोझ लादते थे, ऐसे अनुष्ठानों को लागू करके जो जीवन के हर पहलू तक फैले हुए थे। लोग निरंतर अशांति में जीते थे, क्योंकि वे रब्बियों द्वारा ठहराई गई आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकते थे। जब उन्हें मनुष्य-निर्मित आज्ञाओं का पालन करना असंभव लगा, तो वे परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति उदासीन हो गए।

प्रभु ने अपने लोगों को यह सिखाया था कि वह दाख की बारी का स्वामी है, और यह कि उनकी सारी संपत्ति उन्हें न्यास के रूप में इस उद्देश्य से दी गई थी कि वे उस संपत्ति का प्रयोग उसी के लिए करें। परन्तु याजकों और शिक्षकों ने अपने पवित्र पद का कार्य इस प्रकार नहीं किया मानो वे परमेश्वर की संपत्ति का प्रबंध कर रहे हों। वे उसके कार्य की उन्नति के लिए उन्हें सौंपे गए साधनों और सुविधाओं को व्यवस्थित रूप से उससे लूट रहे थे। उनके लोभ और लालच के कारण वे मूर्तिपूजकों के बीच भी तिरस्कृत होने लगे। इस प्रकार अन्यजाति संसार को परमेश्वर के चरित्र और उसके राज्य के नियमों का गलत अर्थ लगाने का अवसर मिल गया।

पिता के समान हृदय से परमेश्वर ने अपनी प्रजा को सहा। वह दयाएँ देकर और दयाएँ वापस लेकर उनसे आग्रह करता रहा। धैर्यपूर्वक उसने उनके पाप उनके सामने रखे, और सहनशीलता से उनकी स्वीकारोक्ति की प्रतीक्षा करता रहा। किरायेदारों पर परमेश्वर के अधिकार का आग्रह करने के लिए भविष्यद्वक्ता और दूत भेजे गए; पर स्वागत के बजाय उनके साथ शत्रुओं जैसा व्यवहार किया गया। किरायेदारों ने उन्हें सताया और मार डाला। परमेश्वर ने और भी दूत भेजे, पर उन्हें भी पहले जैसे ही व्यवहार का सामना करना पड़ा; फर्क बस इतना था कि किरायेदारों ने और भी अधिक प्रबल द्वेष दिखाया।

अंतिम उपाय के रूप में, परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, यह कहते हुए, 'वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे।' पर उनके विरोध ने उन्हें प्रतिशोधी बना दिया था, और वे आपस में कहने लगे, 'यह तो वारिस है; आओ, हम इसे मार डालें, और उसकी विरासत पर कब्जा कर लें। तब दाख की बारी का आनंद उठाने के लिए हम ही रह जाएंगे, और फल के साथ जैसा चाहेंगे वैसा करेंगे।'

यहूदी शासक परमेश्वर से प्रेम नहीं करते थे; इसलिए उन्होंने अपने आप को उससे अलग कर लिया, और न्यायपूर्ण निपटारे के लिए उसके सभी प्रस्तावों को अस्वीकार कर दिया। परमेश्वर के प्रिय मसीह दाख की बारी के स्वामी के अधिकारों का दावा प्रस्तुत करने आए; परन्तु दाख की बारी के किसानों ने उनके साथ स्पष्ट तिरस्कार का व्यवहार किया, कहते हुए, हम इस मनुष्य को अपने ऊपर शासन करने नहीं देंगे। वे मसीह के चरित्र की सुंदरता से ईर्ष्या करते थे। उनकी शिक्षा देने की रीति उनसे बहुत उच्च थी, और वे उनकी सफलता से भयभीत थे।

उन्होंने उन्हें चेताया, उनकी कपटता को उजागर किया, और उनके कर्म-मार्ग के निश्चित परिणाम उन्हें दिखाए। इससे वे उन्माद में भर उठे। जिन डॉट-फटकारों को वे मौन नहीं करा सकते थे, उनसे वे तिलमिला उठते थे। मसीह जो धार्मिकता का उच्च मानक सदा प्रस्तुत करते थे, उससे वे घृणा करते थे। उन्होंने देखा कि उनकी शिक्षा उन्हें उस स्थान पर ला रही थी जहाँ उनका स्वार्थ बेनकाब हो जाएगा, और उन्होंने उन्हें मार डालने का निश्चय कर लिया। उनके सत्यनिष्ठा और भक्तिभाव के उदाहरण, और उनके हर कार्य में प्रकट हुई उन्नत आध्यात्मिकता, उन्हें अप्रिय थी। उनका समूचा जीवन उनके स्वार्थ के लिए एक भर्त्सना था, और जब अंतिम परीक्षा आई—वह परीक्षा जिसका अर्थ था अनन्त जीवन के लिए आज्ञाकारिता या अनन्त मृत्यु के लिए आज्ञा-उल्लंघन—तो उन्होंने इस्राएल के पवित्र को अस्वीकार कर दिया। जब उनसे मसीह और बरअब्बा में से चुनने को कहा गया, तो वे चिल्लाए, 'हमारे लिये बरअब्बा को छोड़ दे!' लूका 23:18। और जब पीलातुस ने पूछा, 'तो फिर यीशु के साथ मैं क्या करूँ?' वे उग्र होकर चिल्लाए, 'उसे क्रूस पर चढ़ाया जाए।' मत्ती 27:22। 'क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ाऊँ?' पीलातुस ने पूछा, और याजकों और शासकों की ओर से उत्तर आया, 'हमारा कोई राजा नहीं, केवल कैसर है।' यूहन्ना 19:15। जब पीलातुस ने अपने हाथ धोए और कहा, 'मैं इस धर्मी व्यक्ति के लहू से निर्दोष हूँ,' तब याजकों ने अज्ञानी भीड़ के साथ मिलकर जोशीले ढंग से यह घोषित किया, 'उसका लहू हम पर और हमारी सन्तानों पर हो।' मत्ती 27:24, 25।

इस प्रकार यहूदी नेताओं ने अपना चयन कर लिया। उनका निर्णय उस पुस्तक में दर्ज किया गया जिसे जॉन ने उस के हाथ में देखा जो सिंहासन पर विराजमान था, वही पुस्तक जिसे कोई मनुष्य खोल नहीं सकता था। अपनी पूरी प्रतिशोधी भावना सहित यह निर्णय उस दिन उनके सामने प्रकट होगा जब यहूदा के गोत्र का सिंह इस पुस्तक की मुहर खोलेगा।

यहूदी लोग इस विचार को संजोए हुए थे कि वे स्वर्ग के प्रिय हैं, और कि उन्हें परमेश्वर की कलीसिया के रूप में सदा उच्च स्थान प्राप्त रहेगा। वे घोषणा करते थे कि वे अब्राहम की संतान हैं, और उनकी समृद्धि की नींव उन्हें इतनी दृढ़ प्रतीत होती थी कि वे अपने अधिकारों से उन्हें वंचित करने के लिए पृथ्वी और स्वर्ग तक को ललकारते थे। परन्तु अविश्वास से भरा जीवन जीते हुए वे स्वयं को स्वर्ग के दण्ड और परमेश्वर से अलगाव के लिए तैयार कर रहे थे।

"दाख की बारी के दृष्टांत में, जब मसीह ने याजकों के सामने उनकी दुष्टता के चरम कृत्य का चित्र प्रस्तुत कर दिया, तो उन्होंने उनसे यह प्रश्न किया, 'तो जब उस दाख की बारी का स्वामी आएगा, वह उन बाग़बानों के साथ क्या करेगा?' याजक बड़ी रुचि से वृत्तांत का अनुसरण कर रहे थे, और विषय का अपने से संबंध सोचे बिना उन्होंने लोगों के साथ मिलकर उत्तर दिया, 'वह उन दुष्ट लोगों को बुरी तरह नाश करेगा, और अपनी दाख की बारी दूसरे बाग़बानों को सौंप देगा, जो अपने-अपने समय पर उसे फल देंगे।'"

अनजाने ही उन्होंने अपने ही विनाश का निर्णय सुना दिया। यीशु ने उन पर दृष्टि डाली, और उनकी भेदक दृष्टि के सामने वे जान गए कि वह उनके हृदयों के रहस्यों को पढ़ रहा था। उनकी दिव्यता उनके सामने असंदिग्ध सामर्थ्य के साथ प्रकट हो उठी। उन्होंने खेती करने वालों में अपना ही चित्र देखा, और वे अनायास पुकार उठे, 'ईश्वर न करे!'

गंभीरता और खेद के साथ मसीह ने पूछा, 'क्या तुमने शास्त्रों में कभी नहीं पढ़ा: जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने तुच्छ जाना, वही कोने का सिरा हो गया; यह प्रभु की ओर से हुआ है, और यह हमारी आँखों में अब्दुत है? इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ, परमेश्वर का राज्य तुमसे ले लिया जाएगा, और ऐसे राष्ट्र को दिया जाएगा जो उसके फल उत्पन्न करता है। और जो कोई इस पत्थर पर गिरेगा, वह चूर-चूर हो जाएगा; पर जिस पर यह गिरेगा, उसे यह पीस डालेगा.'

यदि लोगों ने उन्हें स्वीकार कर लिया होता, तो मसीह यहूदी राष्ट्र पर आने वाले विनाश को टाल देते। परन्तु ईर्ष्या और डाह ने उन्हें अडिग और कठोर बना दिया। उन्होंने ठान लिया कि वे नासरत के यीशु को मसीहा के रूप में स्वीकार नहीं करेंगे। उन्होंने संसार के प्रकाश को अस्वीकार कर दिया, और तब से उनके जीवन मध्यरात्रि के

समान घोर अंधकार से घिर गए। पूर्वकथित विनाश यहूदी राष्ट्र पर आ पड़ा। उनके अपने उग्र आवेग, अनियंत्रित होकर, उनके विनाश का कारण बने। अंधे क्रोध में उन्होंने एक-दूसरे को नष्ट कर दिया। उनके विद्रोही, हठी अभिमान के कारण उन पर उनके रोमी विजेताओं का कोप टूट पड़ा। यरूशलेम नष्ट कर दिया गया, मंदिर खंडहरों में बदल दिया गया, और उसका स्थल खेत की तरह जोत दिया गया। यहूदा के वंशज अत्यंत भयानक प्रकार की मौतों से मर गए। लाखों को बेचा गया, ताकि वे अन्यजातियों की भूमियों में बंधुआ दास बनकर सेवा करें।

एक जाति के रूप में यहूदी लोग परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने में असफल रहे, और दाख की बारी उनसे ले ली गई। जिन विशेषाधिकारों का उन्होंने दुरुपयोग किया था, जिस काम की उन्होंने उपेक्षा की थी, वह दूसरों को सौंप दिया गया।

"दाखबारी का दृष्टान्त केवल यहूदी राष्ट्र तक सीमित नहीं है। यह हमारे लिए भी एक शिक्षा है। इस पीढ़ी की कलीसिया को परमेश्वर ने महान विशेषाधिकार और आशीर्ष प्रदान की हैं, और वह उनके अनुरूप प्रतिफल की अपेक्षा करता है।" Christ's Object Lessons. 284-296.

योएल की पुस्तक संसार के अन्त में होने वाली अन्त की वर्षा के इतिहास को प्रकट करती है। अन्त की वर्षा, प्रकाशितवाक्य चौदह में तीसरे स्वर्गदूत द्वारा दिया गया परमेश्वर का अन्तिम चेतावनी संदेश है। यद्यपि अन्त की वर्षा तीसरे स्वर्गदूत के संदेश का प्रतिनिधित्व करती है, यह देवत्व और मानवता के बीच की संचार-प्रक्रिया को भी दर्शाती है, जिसे जकर्याह के स्वर्ण तेल, प्रारम्भिक और अन्त की वर्षाओं, वेदी से आने वाली आग तथा अन्य प्रतीकों द्वारा निरूपित किया गया है। अन्त की वर्षा केवल एक संदेश और परमेश्वर तथा मनुष्य के बीच की संचार-प्रक्रिया ही नहीं है, बल्कि यह बाइबल अध्ययन की वह एकमात्र पवित्र ठहराई गई "विधि" भी है, जो परमेश्वर के वचन में समर्थित है। वही विधि यशायाह के अध्याय अट्ठाईस में पाई जाने वाली "पंक्ति पर पंक्ति" है।

प्राचीन और आधुनिक इस्राएल की शुरुआत में, परमेश्वर, "दाखबान", ने इस्राएल को "जंगल" से निकालकर लाया। चाहे मिस्र में चार सौ तीस वर्षों का दासत्व हो या 538 से 1798 तक के अंधकार युग का बंधन, इस्राएल को "जंगल" से बाहर निकाला गया, क्योंकि "जंगल" दासत्व और कैद का प्रतीक है। चाहे प्राचीन वास्तविक इस्राएल हो या आधुनिक आत्मिक इस्राएल—परमेश्वर ने उन्हें जंगल की बंधुआई से छुड़ाया और उन्हें "अपनी चुनी हुई संपत्ति, प्रभु की दाखबारी" के रूप में "स्थापित" किया, जिन्हें याजक और राजकुमार होने के लिए बुलाया गया और जिन्हें "परमेश्वर के वचन" का प्रतिनिधित्व करने का विशेषाधिकार "सौंपा गया"। प्राचीन इस्राएल के लिए ये "वचन" व्यवस्था थे, और आधुनिक इस्राएल के लिए वे व्यवस्था भी और भविष्यवाणियाँ भी हैं।

"परमेश्वर ने इस समय अपनी कलीसिया को, जैसे उसने प्राचीन इस्राएल को बुलाया था, पृथ्वी पर ज्योति के रूप में खड़े होने के लिए बुलाया है। सत्य के सामर्थी फाड़ने वाले औजार के द्वारा, प्रथम, द्वितीय, और तृतीय स्वर्गदूतों के संदेशों के द्वारा, उसने उन्हें कलीसियाओं से और संसार से अलग किया है, ताकि उन्हें अपने साथ एक पवित्र निकटता में ले आए। उसने उन्हें अपनी व्यवस्था का संरक्षक ठहराया है और इस समय के लिए भविष्यद्वाणी के महान सत्यों को उन्हें सौंपा है। जैसे प्राचीन इस्राएल को सौंपे गए पवित्र वचन थे, वैसे ही ये भी एक पवित्र न्यास हैं, जिन्हें संसार तक पहुँचाया जाना है। प्रकाशितवाक्य 14 के तीन स्वर्गदूत उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो परमेश्वर के संदेशों के प्रकाश को स्वीकार करते हैं और उसके प्रतिनिधियों के रूप में निकल पड़ते हैं, ताकि पृथ्वी की लंबाई और चौड़ाई भर में चेतावनी का घोष करें।" टेस्टिमोनीज़, खंड 5, 455.

आधुनिक इस्राएल को अंतिम वर्षा की शक्ति के अधीन तीसरे स्वर्गदूत की जोरदार पुकार की घोषणा करने के लिए नियुक्त किया गया था, और पवित्र आत्मा की शक्ति के अधीन अपने व्यक्तिगत अनुभव में मसीह का चरित्र प्रकट करना था। तीसरे स्वर्गदूत की यह जोरदार पुकार तब पूरी होती है जब अंतिम वर्षा उंडेली जाती है, उस समय जब बाबुल की मदिरा से मतवाले लोगों का एक वर्ग "शांति और सुरक्षा" की झूठी अंतिम वर्षा का संदेश प्रचारित कर रहा होता है। ये यशायाह के इफ्राइम के मतवाले और योएल के दाखमधु पीने वाले हैं, जिनके मुख से नई दाखमधु छीन ली

गई है। जो सच्चे अंतिम वर्षा के संदेश को ग्रहण करते हैं, उनका प्रतिनिधित्व दानिय्येल, मीशाएल, हनन्याह और अजर्याह करते हैं, जिन्होंने स्वर्गीय भोजन के लिए बाबुल के भोजन को अस्वीकार कर दिया। ये वही एक लाख चवालीस हजार हैं जो मूसा और मेम्ने का, और दाख की बारी का भी गीत गाते हैं; क्योंकि दाख की बारी का दृष्टान्त प्राचीन इस्राएल के वाचा-संबंध की शुरुआत में मूसा के इतिहास में पूरा हुआ था, और यह प्राचीन इस्राएल के वाचा-संबंध के अंत में मेम्ने के इतिहास में फिर से पूरा हुआ।

दाख की बारी का गीत इस बात पर समाप्त होता है कि जब नई वाचा की प्रजा का प्रभु से विवाह हो रहा होता है, तब पूर्व वाचा की प्रजा को छोड़ दिया जाता है। प्रभु ने मरुभूमि के चालीस वर्षों के भटकाव में जो मर गए थे, उन्हें छोड़ दिया, और उसी समय, जब वह जो मरने वाले थे उनसे विवाह-विच्छेद कर रहा था, उसने यहोशू के साथ वाचा बाँधी। उसी समय प्रभु प्राचीन इस्राएल से विवाह-विच्छेद कर रहा था, जब वह मसीही कलीसिया से विवाह कर रहा था। अल्फा, अर्थात् आरंभ का इतिहास, मूसा द्वारा दर्शाया गया है, और ओमेगा, अर्थात् अंत, का प्रतिनिधित्व मेम्ना करता है। वे दोनों जिस इतिहास का प्रतिनिधित्व करते हैं, वह दाख की बारी के दृष्टान्त का इतिहास है; इस प्रकार यशायाह का दाख की बारी का गीत, प्रकाशितवाक्यकार यूहन्ना का 'मूसा और मेम्ने का गीत' है।

हम इन विचारों को अगले लेख में आगे बढ़ाएँगे।

"ये सिस्टर वाइट के शब्द नहीं, बल्कि प्रभु के शब्द हैं, और उसके दूत ने उन्हें मुझे आपको देने के लिए दिए हैं। परमेश्वर आपसे आह्वान करता है कि आप अब उसके उद्देश्यों के विरुद्ध काम न करें। उन लोगों के विषय में बहुत-सा निर्देश दिया गया जो अपने को मसीही कहते हैं, जबकि वे शैतान के गुण प्रकट कर रहे होते हैं, और भाव, वचन, तथा कर्म से सत्य की उन्नति का विरोध करते हुए निश्चय ही उसी मार्ग पर चल रहे हैं जहाँ शैतान उन्हें ले जा रहा है। अपने हृदय की कठोरता में उन्होंने ऐसा अधिकार हथिया लिया है जो किसी भी प्रकार से उनका नहीं है, और जिसका उन्हें प्रयोग नहीं करना चाहिए। महान शिक्षक कहते हैं, 'मैं उलट दूँगा, उलट दूँगा, उलट दूँगा।' बैटल क्रीक में लोग कहते हैं, 'हम प्रभु का मंदिर हैं, प्रभु का मंदिर हैं,' पर वे साधारण आग का उपयोग कर रहे हैं। उनके हृदय परमेश्वर के अनुग्रह से न तो नरम हुए हैं और न ही वश में आए हैं।" मैन्युस्क्रिप्ट रिलीज़ेस, खंड 13, 222।

परमेश्वर का धैर्य किसी उद्देश्य के लिए है, पर तुम उसे निष्फल कर रहे हो। वह ऐसी स्थिति आने दे रहा है, जिसे तुम शीघ्र ही रोके जाने की कामना करोगे, पर तब बहुत देर हो चुकी होगी। परमेश्वर ने एलियाह को आज्ञा दी कि वह क्रूर और कपटी हज़ाएल का सीरिया के राजा के रूप में अभिषेक करे, ताकि वह मूर्तिपूजक इस्राएल के लिए एक चाबुक बन जाए। कौन जानता है कि परमेश्वर तुम्हें उन्हीं छलनाओं के हवाले न कर दे, जिनसे तुम प्रेम करते हो? कौन जाने कि जो उपदेशक विश्वासयोग्य, दृढ़ और सच्चे हैं, वही हमारी कृतघ्न कलीसियाओं को शांति का सुसमाचार सुनाने वाले आखिरी न हों? हो सकता है विनाशक पहले ही शैतान के अधीन प्रशिक्षण पा रहे हों और कुछ और ध्वजवाहकों के प्रस्थान की प्रतीक्षा कर रहे हों, ताकि उनकी जगह लेकर झूठे भविष्यद्वक्ता की वाणी में 'शांति, शांति' पुकारें, जब प्रभु ने शांति कही ही नहीं। मैं बहुत कम रोता हूँ, पर अब मेरी आँखें आँसुओं से इतनी भर आई हैं कि वे मानो अंधी हो गई हैं; लिखते समय ये आँसू मेरे कागज़ पर गिर रहे हैं। संभव है कि शीघ्र ही हमारे बीच सब भविष्यवाणियाँ समाप्त हो जाएँ, और वह स्वर जिसने लोगों को झकझोरा है अब उनकी देहगत नींद को और न विचलित करे।

"जब परमेश्वर पृथ्वी पर अपना विलक्षण कार्य करेगा, जब पवित्र हाथ सन्दूक को अब और नहीं उठाएँगे, तब लोगों पर हाय होगी। हाय, काश कि तू, हाँ तू भी, अपने इस दिन में, उन बातों को जानता जो तेरी शांति से संबंधित हैं! हाय, काश हमारे लोग, जैसे नीनवे ने किया, अपनी पूरी शक्ति से पश्चात्ताप करें और पूरे हृदय से विश्वास करें, ताकि परमेश्वर अपना भयंकर क्रोध उनसे फेर दे।" टेस्टिमोनीज़, खंड 5, 77.

यदि आप अपने हृदय की हठ को पोषित करें, और घमंड व आत्मधार्मिकता के कारण अपने दोषों को स्वीकार न करें, तो आप शैतान के प्रलोभनों के वश में छोड़ दिए जाएँगे। यदि जब प्रभु आपकी भूलें प्रकट करें तब भी आप न तो पश्चात्ताप करें और न स्वीकारोक्ति करें, तो उसकी व्यवस्था आपको उसी पाठ से बार-बार गुज़ारेगी। आप

वैसी ही प्रकृति की गलतियाँ करते रहेंगे, बुद्धि की कमी बनी रहेगी, और पाप को धार्मिकता कहेंगे और धार्मिकता को पाप। इन अंतिम दिनों में जो अनेक प्रकार के छल-कपट व्याप्त होंगे, वे आपको घेर लेंगे, और आप अपना नेता बदल देंगे, और आपको यह भी पता नहीं होगा कि आपने ऐसा कर दिया है। रिव्यू एंड हेराल्ड, 16 दिसंबर, 1890।